موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 3

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهنديةس

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त3

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के कुछ विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

11.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि न्यायप्रिय गैर मुस्लिम जब इससे अवज्ञत होता है तो आश्चर्यचकित रह जाता है और उसे यह विश्वास हो जाता है कि वह अल्लाह की ओर से नाज़िल की गई है और यह कि समस्त मानव मिल कर भी इस जैसी सुंदर व उत्तम शरीअ़त नहीं प्रस्तुत कर सकते,यह गैर मुस्लिम की ओर से सत्य की साक्ष्य है,अल्लाह तआ़ला ने कुरान पाक के प्रति सत्य फरमाया:

(ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا)

अर्थात:यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल(बे मेल)बातें पाते!

12.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति इससे अवज्ञत हो जाता है कि वह अल्लाह की ओर से है और यह असंभव है कि वह मनुष्य की ओर से हो,तो उसके कारण वह इस्लाम में प्रवेश कर जाता है,ऐसे लोगों की संख्या अनगिनत है,चाहे काफिर देशों के लोग हों अथवा इस्लामी देशों में रहने वाले गैर मुस्लिम,चाहे शिक्षित लोग हों अथवा अनपढ़ वग।

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

13.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह मुद्रास्फीति एवं अपस्फीति के मध्य एक उदारवादी धर्म है,अल्लाह ने फरमायाः

(وكذلك جعلناكم أمة **وسطا** لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا)

अर्थातःऔर इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत(समुदाय)बना दिया,ताकि तुम सब पर साक्षी बनो,और रसूल तुम पर साक्षी हों।

अतः इस्लाम की शिक्षाएं आस्था,प्रार्थनाएं,मामलात एवं चरित्र व व्यवहार के विषय में उदारवादी व मध्यम हैं।

14.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह आत्मा एवं शरीर की आवश्यक्ताओं के मध्य संतुलन बनाए रखने की ओर बोलाती है,अतः आध्यात्मिक एवं संसारिक जीवन के बीच कोई टकराव नहीं पाया जाता,क्योंकि शरीअ़त भिन्न प्रकार की दिली,शारीरिक एवं आध्यात्मिक प्रार्थानाओं के द्वारा आत्मा को पवित्र करने का न्योता देती है,जैसे तवक्कुल(विश्वास)भय,आशा,नमाज़,रोज़ा,ह़ज,ज़िर्क,पुण्य के कार्यों में धन खर्च करना और उन जैसी अन्य प्रार्थनाएं जो ईमान की शाखाओं में आते है और जिन की संख्या सत्तर से अधिक है।मानव जीवन शैली के विपरीत,जैसे भौतिकवादी धर्मनिरपेक्षता जो आध्यात्मिक आवश्यकताओं को बिल्कुल भुला देती और मनुष्य को केवल भौतिकवादी मखलूक़ बन कर रहने का न्योता देती है,जो केवल अपने भौतिक आवश्यकताओं के प्रति सोचे,चाहे उसके चलते उसे अपने माता पिता और परिवार से ही क्यों न हाथ धोना पड़े,यही कारण है कि धर्मनिरपेक्षता के मानने वालों के बीच परिवार व्यवस्था उजड़ गया और पुरुष एवं महिला का आपसी संबंध मित्रता मात्र तक सीमित हो कर रह गया।

भौतिकवादी धर्मनिरपेक्षता के विपरीत रहबानियत(मठवाद)का तरीका यह है कि वह शारीरिक आवश्यकता से दूर रहती है,वह इस प्रकार कि अपने अनुयायियों को विवाह से दूर रहने की दावत देती है,और अल्लाह ने जिन चीजों को ह़लाल(वैध)कर रखा है उन में से कुछ को ह़राम(अवैध)बना देती है,जैसा कि आराधनालयों के मठवासियों में ऐसा पाया जाता है।

जहां तक इस्लाम की बात है तो वह मनुष्य की आध्यात्मिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं को स्वीकरता और उनके बीच संतुलन बनाए रखने की दावत देता है,अतः वह भौतिकवाद में पड़ने,मठवाद एवं उग्रवाद अपनाने से रोकता है और संसार में दौड़ भाग करने और पुनर्वास में भाग लेने का आदेश देता है,इसी प्रकार बन्दा

और उसके रब के मध्य संबंध को उत्तम बनाने का भी आदेश देता है,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सह़ाबी(साथी)स्वयं को पूजा पाठ में झोंके रहना चाहते थे तो आप ने उन से फरमायाः(तुम्हारी आत्मा/प्राण का भी तुम पर अधिकार है)।[2] जब कुछ सहाबा ने कहाःवे मांस नहीं खाते,कुछ ने कहाःमैं महिलाओं से विवाह नहीं करुंगा।तीसरे ने कहाःमैं रोज़ा रखुंगा और इफतार नहीं करुंगा।चौथे ने कहाःमैं रातों को क़्याम करुंगा और आराम नहीं करुंगा,तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सबसे फरमायाः(मं मांस भी खाता हूं,महिलाओं से निकाह़ भी करता हूं,रोज़े भी रखता हूं और इफतार भी करता हूं,नमाज़ भी पढ़ता हूं और आराम भी करता हूं,जिसने मेरी सुन्नत से रूची हटाली वह मुझ से नहीं)।[3]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

15.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता उसकी शिक्षाओं का सुंदर एवं उत्तम होना है,अतः वह हर उस कार्य की ओर बोलाती है जिसकी सुंदरता उत्तम बुद्धि एवं उच्च स्वभाव से ज्ञात होता है और

---

[2] इसे अह़मद(268/6)आदि ने आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्नण किया है और "المسند" (26308)के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है।इस ह़दीस का मूल बोखारी मुस्लिम में अबू हौज़ैफा रज़ीअल्लाहु अन्हं और अन्य सह़ाबा से वर्णित है।

[3] इसे बोखारी(5063)और इसी प्रकार मुस्लिम(1401)ने अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

हर उस कार्य से रोकती है जिसका घृणा उत्तम बुद्धि एवं उच्च स्वभाव से ज्ञात होती है,अल्लाह ने फरमायाः

(ومن **أحسن** من الله **حكما** لقوم يوقنون)

अर्थातःऔर अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है,उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

अल्लाह ने अधिक फरमायाः (إن الله يأمر بالعدل **والإحسان** وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي يعظكم لعلكم تذكرون)

अर्थातःवीस्तुतः अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समदीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है।और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है।और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन सादी रह़िमहुल्लाहु फरमाते हैंःशरीअ़त की शिक्षाएं,सुन्दर व्यवहार और बन्दों की हितों(का ध्यान रखने)का आदेश देती हैं,न्याय,कृपा,दयालुता और भलाई पर उकसाती हैं,कुता चरित्र हीनता से रोकती हैं,अतः पूर्णता की प्रत्येक वे विशेषताएं जिसे नबियों एवं रसूलों ने सही माना,उसे इस्लामी शरीअ़त ने भी सही माना और प्रत्येक वे दीनी व दुनयावी नीति जिसकी ओर पूर्व की शरीअ़तों ने बोलाया,इस्लामी ने भी उससे सहमती जताई,और हर बुराई व दंगे से रोका और दूर रहने पर प्रोत्साहित किया।[4]

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

[4] थोड़े हेर फेर के साथ (الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي) से लिया गया है,पृष्ठः15,प्रकाशकः دار العاصمة —रियाज

अर्थातःअल्लाह तआ़ाला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बडा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखकः

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी